रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के0 पी0 सिटी –67/2024–26

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निषपक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 46 ● अंक – 24 ● कानपुर 16 से 31 दिसम्बर 2024 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक

गम्भीर व असाध्य रोगों पर उपयोगिता सिद्ध करें

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कीर्ति को यदि अक्षुण रखना है तो हमें कार्य को प्रमुखता देनी होगी, इतिहास यह बताता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जन्म बीमारियों के समूल नाश के लिए किया गया था डा0 मैटी ने उस समय देखा कि जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां थीं उनसे रोग का समूल नाश नहीं होता था बल्कि लक्षण कुछ समय के लिए दब जाते थे जोकि विपरीत परिस्थितियों में पुनर्जीवित होकर शरीर को रोग ग्रस्त कर देते थे, डा0 मैटी के अनुसार शरीर का रोगग्रस्त होना रस और रक्त के असतुंलन से होता है जब यह दोनों संतुलित अवस्था में होते हैं तो शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है रोगों का जन्म परिस्थिति जन्य होने के साथ बहुत कुछ मनुष्य के आहार विहार पर निर्भर करता है, जब आहार विहार में खराबी आती है तो ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं जो कि शरीर को रोग ग्रस्त कर देते हैं, डा0 मैटी का मानना था कि एक रोग में कई लक्षण एकसाथ प्रकट होते हैं इसलिए हर लक्षण के आधार पर औषधि का चयन कर रुग्ण शरीर का इलाज करना होता है अर्थात संयुक्त लक्षणों वाले रोग के लिए संयुक्त औषधि की आवश्यकता होती है तत्समय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का जर्मनी और इटली में बोल–बाला था इसलिए मैटी के इस विचार को वहां के चिकित्सकों ने हास्यस्पद बताया था, यह तो कालान्तर में उनके इस विचार को होम्योपैथी ने ही स्वीकारा, आज की जो होम्योपैथी है उसमें कहीं न कहीं मैटी के विचारों का मिश्रण दिखायी देता है, होम्योपैथी को देश में मान्यता मिल चुकी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता के लिए संघर्षरत है मान्यता वह विषय है जिसपर सरकार को निर्णय लेना होता है, निर्णय लेने के लिए सरकार के पास बहुत सारे पहलू व मापदण्ड हैं हमें उन मापदण्डों और पहलुओं को पार करना है तभी जाकर हम सरकार की कसौटी पर खरे उतरेंगे जो मापदण्ड बनायें जाते हैं वह कार्यों के मूल्यांकन और उसकी योग्यता के निर्धारण के लिए होते हैं, जब होम्योपैथी को मान्यता मिली थी उस समय परिस्थितियां दूसरी थीं चिकित्सा शिक्षा का इतना विकास नहीं था, इतना वैज्ञानिक विश्लेषण भी नहीं होता था यदि हम होम्योपैथी की मान्यता पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट नज़र आयेगा कि कार्य के आधार पर ही होम्योपैथी को सरकार द्वारा मान्यता दी गयी थी यदि हम थोड़ा पीछे दृष्टि डालें तो हमें दिखायी पड़ेगा कि उस समय भी होम्योपैथी में बहुत काम हुआ था सर्वाधिक धर्मार्थ औषधालय व चिकित्सालय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के ही दिखायी पड़ते थे, इन्हीं चिकित्सालयों का परिणाम था कि गरीब जन से लेकर मध्यम मध्यवर्गीय तक होम्योपैथी की पहुँच हो गयी पहले लोगों ने कहा कि छोटी मीठी–मीठी गोलियां शरीर पर क्या प्रभाव डालेंगी ? परन्तु जब इनका प्रभाव सकारात्मक दिखा तब समाज में यह सन्देश गया कि चिकित्सा पद्धति लाभकारी है, समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से जुड़ गया इसका परिणाम यह हुआ कि जो अपने आप को सभ्रान्त धनाढ्य व अभिजात्य मानते थे उन्होंने भी होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारा, धीरे –धीरे होम्योपैथी जनरूचि में शामिल हो गयी।

यही व्यवस्था यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रारम्भ कर दी जाये तो इसमें कोई दो राय नही है कि इस चिकित्सा पद्धति का विकास न हो पाये जिस विकास की राह में हम सब पंक्तिबद्ध होकर खड़े हैं उन्हें परिणाम मिलने लगेंगे, काम करने के लिए जो वातावरण होना चाहिये, वह हमें उपलब्ध है सिर्फ़ हमें अपनी मनोदशा में परिवर्तन लाना है, कार्य के प्रति भाव उत्पन्न करने हैं, परिणामों की चिन्ता किये बगैर हम सबको अपनी पूरी क्षमताओं का प्रयोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्य क्षेत्र में लगाना चाहिये, बीमारियां तो बहुत सारी हैं हर एक पर विजय पाना सम्भव नहीं है लेकिन कुछ ऐसी असाध्य बीमारियां जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों के लिए भले ही असाध्य हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इन बीमारियों की सफ़ल चिकित्सा उपलब्ध है, एक सर्वे के अनुसार भारत में लगभग 10 प्रतिशत लोग विभिन्न तरह के कैंसर से पूरी तरह पीड़ित हैं और जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं उनके चिकित्सक इस गम्भीर बीमारी के उपचार के नाम पर आर्थिक शोषण भी करते हैं, सिंकायी और कीमोथेरेपी के नाम पर मंहगी–मंहगी दवाईयां रोगियों को लिखी जाती हैं और विवश हो कर रोगी व उनके परिजन कष्ट दूर होने की आशा में सब कुछ सहन करते हैं, कैंसर में रोगी को जिस भंयकर पीड़ा का अनुभव होता है जिसका वर्णन करना आसान नही है मात्र रोगी ही नहीं उसके परिजन भी उसकी इस पीड़ा को सह नहीं पाते हैं परिणामतः जो जहां जानकारी पाता है लाभ के लिए वहां पहुँच जाता है, इतिहास साक्षी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इस गम्भीर और असाध्य बीमारी के लिए औषधियां उपलब्ध हैं बस आवश्यकता है तो सिर्फ़ इनके सही उपयोग की।

यदि कैंसर अभिशाप है! तो *इलेक्ट्रो होम्योपैथी वरदान !!*

- गम्भीर रोगों को ठीक करने में है महारत
- योग्यता और अनुभव का पूरा प्रयोग हो
- अधिकार और कर्तव्यों में कर्तव्य को प्रमुखतः
- रोग को ठीक करने के दावे को सिद्ध करें
- श्वांस रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी गुणकारी
- शरीर के अनुकूल हैं औषधियां
- दावों को सिद्ध करने का उचित समय
- डेंगू और चिकनगुनियां पर अज़मायें हाथ

हमें आज भी याद आता है कि वर्ष 1990 में दिल्ली के प्रगति मैदान में वर्ल्ड हेल्थ ट्रेड फ़ेयर में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का एक स्टाल लगा था जहाँ पर अन्य कम्पनियों द्वारा अपने–अपने स्टालों को बेहतर ढंग से दिखाने के लिए तरह–तरह के उपक्रम किये गये थे, स्टालों को करीने से सजाया गया था स्टाल में सुन्दर और आकर्षर्ण छरहरी काया वाली बालायें बैठायी गयी थीं जिन्हें देखकर लोग आकर्षित हों और कुछ क्षण उस स्टाल को भी दे दें वहीं इलेक्ट्रो होम्योपैथीक के स्टाल में सिर्फ़ एक बड़ा सा पोस्टर लगा था जिस पर भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी केन्द्रों को इंगित किया गया था तथा पीछे बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था ***Yes We Have Answer To Cancer*** यह शब्द लोगों को इतना प्रभावित कर रहे थे कि पूरे परिसर में लगे हुए सारे स्टालों की तुलना में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इस स्टाल में सर्वाधिक भीड़ नज़र आती थी और हर आने वाला यही सवाल करता था कि आप इतने विश्वास के साथ कैंसर के बारे में यह कैसे दावा कर रहे हैं ? और सबसे अच्छी बात तो यह थी कि स्टाल को संचालित करने की जिम्मेदारी जिस प्रतिनिधि के पास होती थी वह बड़ी ही सहजता से इसका उत्तर दे देता था समान्य जन से लेकर चिकित्सा विज्ञान से जुड़े व्यक्ति एक जिज्ञासु की भांति कैंसर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विचार जानना चाहता था, नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, नई दिल्ली के कुछ छात्र व होम्योपैथी में रिसर्च कर रहे चिकित्सक निरन्तर यह जिज्ञासा व्यक्त करते थे कि क्या इस तरह से भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कैंसर का इलाज किया जा सकता है ! जब वर्ष 1990 में इतने दमदार दावे के साथ कैंसर पर अपने विचार दिये जा सकते थे तो आज 34 वर्षों के बाद जब कि हम सब बहुत परिपक्व हो चुके हैं ओर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के काफी जानकार भी हो चुके हैं तो क्यों न हम सब मिलकर इस गम्भीर बीमारी पर अपनी एक राय बनायें और रोगियों को रोग मुक्त करें यह बात सत्य है कि कैंसर का समूल नाश प्रथम व द्वितीय अवस्था में ही हो पाता है यदि तीसरी अवस्था आ जाती है तो दर्द से लाभ तो दिला ही देते हैं, अभी कुछ वर्षों की पूरानी बात है कि पटना के एक चिकित्सक ने बिहार राज्य के स्वास्थ मंत्री के एक रिश्तेदार जो कैंसर से ग्रसित थे जीवन व मृत्यु से लड़ रहा थे असहनीय वेदना से जो चीत्कार निकलती थी उससे अगल–बगल के लोग भी दुखी हो जाते थे सब उनके मृत्यु की कामना करते थे परन्तु मृत्यु आती ही नहीं थी, स्वास्थ्य मंत्री का रिश्तेदार होने के कारण प्रदेश और प्रदेश के बाहर अच्छे से अच्छे कैंसर विशेषज्ञों ने उनका इलाज किया परन्तु लाभ नहीं मिला एक चिकित्सक ने तो कह दिया कि घर ले जाइये भगवान पर भरोसा करिये, तभी किसी ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नाम सुझा दिया ! मंत्री जी के निर्देश पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक की खोज शुरू हुई और जो चिकित्सक मिला उसने कहा कि इलाज तो मैं करूंगा परन्तु यह स्पष्ट कर दूँ कि रोगी ठीक नहीं होगा परन्तु दर्द से मुक्ति मिल जायेगी और हुआ भी यही जैसा चिकित्सक ने कहा था उसने अपना दावा पूरा किया, मंत्री जी गदगद हो गये चिकित्सक के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भी शुभ चिन्तक हो गये मंत्री जी जहां कहीं भी जाते इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चर्चा अवश्य करते, यहां पर यह उदाहरण लिखने का तात्पर्य यह है कि हमारी औषधियों में इतनी ताकत है कि निसंदेह कैंसर जैसे असाध्य रोग पर नियन्त्रण पाया जा सकता है।

नित्य नई क्रियायें इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शून्य की ओर बढ़ाने का संकेत

शून्य का अपना बड़ा महत्व है, शून्य गणना प्रारम्भ करती है, शून्य से ही शिखर की तरफ बढ़ने की प्रक्रिया भी शुरू होती है और शून्य के बाद जीवन की तलाश भी होती है यदि हम शून्य की महत्ता पर लिखें तो शायद शब्द कम पड़ जायेंगे शून्य एक बिन्दु है और शून्य एक आकार भी है, स्वामी विवेकानन्द ने शून्य पर बोलते हुए भारत को विश्वगुरू की दिशा में स्वीकारने का महत्वपूर्ण प्रयास किया था अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शून्य का तात्पर्य लगातार बढ़ती हुई अराजकता, नित्य नई क्रियायें इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शून्य की तरफ़ बढ़ाने का संकेत कर रही है।

वर्ष 2003 के दूसरे चरण में लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी में उतार चढ़ाव आते रहे हैं इस तरह से यदि हम देखें तो 21 वर्षों के बाद भी स्थिरता के दर्शन नहीं हो पा रहे हैं और यह अस्थिरता कभी भी प्रकृति में सहायक सिद्ध नहीं हो सकती, 2003 का वर्ष तो ठीक ठाक था लेकिन जाते–जाते जो प्रभाव छोड़ा उसकी लकीरें आज भी स्पष्ट दिखायी देती हैं, यह लकीरें किसी को थोड़ा और किसी को बहुत ज़्यादा दर्द दे गयीं, जिसने दर्द सह लिया वह तो स्थिरता की तरफ़ आगे बढ़ गया और जो दर्द से चिढ़ गया और इस दर्द को दूर करने के लिए जो टेढ़े–मेढ़े उपाय किये गये उसके निशान आज भी देखे जा सकते हैं, 2003 तक प्रदेश में बहुत सारी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्थायें संचालित हो रही थीं जो शैक्षिणक गतिविधियों में लिप्त थीं, इन गतिविधियों में निरन्तरता बनाये रखने के लिए माननीय उच्च न्यायालय के निर्देशों के पालन हेतु जिन निर्देशों का पालन करना था उन्हीं निर्देशों के पालन में कुछ संस्थाये अपने आपको सक्षम नहीं पा रही थीं फलतः उन संस्थाओं ने सामुहिक रूप से माननीय उच्च न्यायालय में एक संस्था प्रमुख की अगुवाई में याचिका दाखिल की याचिका निरस्त हुई और जो परिणाम आये वह सुखद नहीं थे।

अन्य संस्थायें तो शान्त होकर बैठ गयीं लेकिन जो नेतृत्वकर्ता संस्था थी उसे चैन नहीं आया और उसने माननीय सर्वोच्च न्यायालय में अपील कर दी, वहां पर भी वही हुआ जो पहले से ही अपेक्षित था, सारा प्रदेश उनकी इस क्रिया से आहत था लोगों के मन में आक्रोश भी था, कुछ समर्थक थे, कुछ विरोधी, परिणाम यह हुआ कि पूरे प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का परिदृश्य ही बदल कर रह गया लेकिन उस व्यक्ति को धन्यवाद है जिसने भी इन परिस्थितियों पर टिप्पणी की थी कि शून्य से हम शिखर की तरफ़ चलेंगे, कहने और सूनने में यह शब्द बहुत अच्छे लगते हैं शून्य से शिखर की कल्पना भी अच्छी है, लेकिन क्या किसी ने सोचा कि शिखर से शून्य में आने के बाद पुनः शून्य से शिखर की तरफ़ बढ़ने की कल्पना और क्रिया कितनी कष्ट दायक व पीड़ा दायक होती है! यह तो सिर्फ़ भोगने वाला ही जानता है, शिखर तक तो आज तक नहीं पहुँचे ! मात्र शून्य की सीमा तोड़ने में हलकी सी सफ़लता अवश्य मिली है, 2003 से 2024 तक इन इक्कीस वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने अनेक रंग देखे परन्तु किसी भी रंग में अपने को रमा नहीं पाई, खोने एवं पाने की प्रक्रिया कब बन्द होगी यह तो कोई भी नहीं जानता ! इस किन्तु एवं परन्तु से हमें बाहर निकलना है और स्थिरता की राह स्वयं ही खोजनी होगी क्योंकि बिना स्थिरता के सारी क्रियायें निरर्थक रहती हैं, सार्थकता के लिये सकरात्मक विचारों के साथ–साथ स्पष्ट एवं पारदर्शी नीति का होना अति आवश्यक है, नीतियों को बनाने के बाद उन पर चलना हमारा ही कर्तव्य है और इसी कर्तव्य पथ पर चलते हुये सफ़लता की एक नई इबारत लिखने की सोच होनी चाहिये।

यद्यपि वर्तमान परिस्थितियां यदि बहुत ज़्यादा सापेक्ष नहीं हैं परन्तु इतनी भी खराब नहीं हैं कि कार्य ही नहीं किया जा सके, हम सभी को चाहिये कि कार्य करते हुये ऐसी परिस्थितियों को जन्म दें जो कि शिखर तक पहुँचने की कल्पना को धीरे–धीरे मूर्त रुप दे।

आज जिन परिस्थितियों से हम लोग गुज़र रहे हैं वह इस बात के स्पष्ट संकेत दे रही हैं कि स्थितियों में बड़ी तेज़ी से बदलाव आ रहा है, ऐसे में तो वही लोग टिके रह पायेंगे जो वास्तविक रुप से कर्तव्य को ही आधार बना कर बढ़ेंगे, जिस किसी ने भी शून्य से शिखर की कल्पना की बात की थी , भले ही उस समय मज़ाक हो ! पर आज यही बात सही व सच हो रही है।

रसातल में ले जायेगी नित्य होती प्रयोगिक क्रियायें

इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ा हर व्यक्ति इस प्रयास में लगा रहता है कि किसी भी तरह से इस चिकित्सा पद्धति को एक स्थायी स्थान प्राप्त हो, वर्षों से चली आ रही दुविधा की स्थिति को विराम मिल सके, वैधानिकता के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हो और शासकीय संरक्षण की प्रक्रिया भी शीघ्र पूरी हो यह सारी बातें धीरे–धीरे पाने के प्रयास में हम सभी लगे हैं परन्तु तरीके अलग–अलग हैं।

तरीके चाहे कितने भी अलग क्यों न हों परन्तु जब उद्देश्य एक होता है तो अच्छे परिणाम की अपेक्षा तो की ही जा सकती है तमाम सारे उहापोहों के बाद अन्ततः 21 जून, 2011 एवं 04 जनवरी, 2012 को क्रमशः भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार ने जो आदेश जारी किये वह पूरे देश में कार्य करने की अधिकारिता प्रदान करते हैं और 4 जनवरी, 2012 का आदेश विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में वैधानिकता एवं अधिकार पूर्वक कार्य करने की राह प्रशस्त करता है एवं काम करने के वे सारे अधिकार हमें प्रदान करता है जो किसी भी अधिकारिक चिकित्सक के लिए आवश्यक है।

आज पूरे देश की स्थिति यह है कि कार्य करने के स्थान पर मान्यता और अन्य विषयों पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं प्रयास करना आवश्यक है क्योंकि बिना प्रयास के कभी कुछ मिलता भी नहीं है परन्तु कभी–कभी अति उत्साहित लोग ऐसा प्रयास कर देते हैं जो आत्मघाती होने के साथ साथ समाजघाती भी होते हैं।

आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी प्रयास हो रहे हैं यदि उस पर हम एक सम्यक दृष्टि डालें तो जो कुछ भी तथ्य सामने आता है वह कदाचित हमें उत्साहित नहीं करता अधिकांश प्रयास तो स्वयं को स्थापित करने के लिए ज़्यादा हो रहे हैं चिकित्सा पद्धति को स्थापित करने के लिए नहीं और इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि अच्छी खासी बनी बनायी स्थिति डगमगाती रहती है,खुद अधिकार पाने का स्वाद लोगों को इतना अच्छा लगता है कि समान्य अधिकारों से उनकी पिपासा शान्त नहीं होती है,उनकी स्थिति यह है कि अपने अलावा कोई अन्य दृष्टिगोचर ही नहीं होता है, जबकि सत्य यह है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति पर किसी एक का एकाधिकार होता ही नहीं है, जब चिकित्सा पद्धति का प्रचार व प्रसार होता है तो वह अधिकार अंशो में बटकर हर चिकित्सक को अधिकार प्रदान करता है, पूर्ण अधिकार और एकाधिकार दोनों ही शब्द किसी भी चिकित्सा पद्धति को आगे तक नहीं ले जा सकते, कारण एकाधिकार अहम् को जन्म देता है और जहां अहम् होता है वहां विकास या प्रगति की कल्पना दिव्यस्वप्न की भाँति है।

किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए दो बातें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, पहली पद्धति की वैधानिकता व उसकी अधिकारिता, दूसरी है चिकित्सा पद्धति की उपयोगिता, वस्तुतः देखा जाये तो उपयोगिता का सिद्धीकरण उसकी ओषधियों और रोगियों के लाभ पर निर्भर करता है, यद्यपि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में दोनों बातें बराबर रूप से उपस्थिति हैं वैधानिकता और अधिकारिता के नाम पर 21 जून, 2011 व 4 जनवरी, 2012 जैसे राष्ट्रीय व प्रादेशिक शासकीय आदेश प्राप्त हैं।

औषधियों के लिए बहुत पहले ही यह सिद्ध हो चुका था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियां जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया से संलिप्त हैं और उनके निर्माण में किसी भी तरह का कोई विवाद नहीं है यह औषधियां वैधानिकता और तथ्यता की कसौटी पर खरी उतर चुकी हैं, परिस्थितियां सामान्य हैं परन्तु हमारे साथियों को इन परिस्थितियों की स्वीकारता नहीं है, तभी तो हर कोई कुछ नया करने को आतुर रहता है और इसी नये पन के चक्कर में कुछ ऐसा करता रहता है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कतई उचित नहीं है, यद्यपि वर्तमान में कुछ ही संस्थायें शैक्षणिक कार्य कर पा रही हैं, जो संस्थायें शैक्षणिक कार्य नहीं कर पा रही हैं वह तरह–तरह के अजीबो–ग़रीब ऐसे कार्य कर देती हैं जो परिस्थितियों को नया मोड़ दे देती हैं, आपको याद होगा कि जब पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर गाज सी गिरी थी उसके बाद किसी एक संस्था को कार्य करने का आदेश प्राप्त हुआ यद्यपि उस संस्था ने कभी भी इसपर अपना एकाधिकार नहीं जमाया उसका कहना था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी सबके लिए लेकिन जो पहले से कार्य कर रहे थे उनके मन में कहीं न कहीं यह टीस थी कि एक आदेश उन्हें या उनकी संस्था को भी मिल जाता, जिससे वह भी अपनी अधिकारिता का बखान कर सकते, इसी चाहत में कुछ लोग न्यायालय की शरण में भी गये, उच्च न्यायालय में हारे, तो सर्वोच्च न्यायालय की शरण ली, उनका भाग्य था कि मान्यता के प्रकरण में भारत सरकार ने एक हलफ़नामा दिया था जिसमें लिखा था कि जब तक मान्यता नहीं मिल जाती तब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने में रोक नहीं है सर्वोच्च न्यायालय ने भारत सरकार के इस हलफ़नामें का संज्ञान लिया गया और योजित विशेष अनुज्ञा याचिका पर निर्णय दिया गया, जिसका कि हमारे साथियों ने गलत ढंग से प्रस्तुतीकरण करके अपने पक्ष में हवा बनाने का पूरा प्रयास किया, आंशिक सफ़लता भी मिली 22 जनवरी, 2015 का वह आदेश जो वस्तुतः किसी के लिए आदेश नहीं है लेकिन उसकी शब्दावली का लोगों ने मनचहा उपयोग किया, अब जब भी कहीं मुकदमा लगता या लगाया जाता है तो उस मुकदमें में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के 22 जनवरी, 2015 के आदेश का उल्लेख अवश्य होता है, न्यायालयों द्वारा इस आदेश का जो संज्ञान लिया जा रहा है वह कोई अच्छे परिणाम नहीं दे रहा है, विगत वर्षों में बाम्बे हाईकोर्ट और मद्रास हाईकोर्ट ने मुकदमों की सुनवाई के दौरान 22 जनवरी, 2015 के आदेश का जो परिणाम निकाला और परिणामोंपरान्त जो आदेश जारी किये वह कोई बहुत अच्छे संकेत नहीं दे रहे हैं, हमें भय है कि जिस तरह किसी भी चीज़ का अत्यधिक दोहन उसकी समाप्ति का संकेत देते हैं ठीक इसी तरह से 22 जनवरी, 2015 के आदेश का अत्यधिक प्रयोग एक नई समस्या को कहीं जन्म न दे दे ? यदि कभी 22 जनवरी, 2015 के आदेश का परीक्षण हो गया तो परिणाम क्या होंगे ? यह तो हम नहीं जानते लेकिन कल्पना अच्छी नहीं है, ठीक इसी तरह से दूसरा पहलू औषधि निर्माण से जुड़ा है पहले औषधि की कमी बतायी जाती थी आज जितनी कम्पनियां औषधि निर्माण के क्षेत्र में कूद चुकी हैं कि कभी–कभी ऐसा लगने लगता है कि शायद इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों का निर्माण एक कुटीर उद्योग का रूप ले चुका है, जिसे भी देखिये एक कम्पनी बना लेता है और औषधि निर्माण और विपणन का कार्य प्रारम्भ कर देता है, दवाईयां बनाना बेचना उनकी गुणवत्ता बनाये रखना अच्छी बात है, प्रगति का सूचक है, लेकिन जब औषधि निर्माण के सिद्धान्तों के साथ छेड़–छाड़ की जाती है तो स्थितियां बहुत दिनों तक अपने पक्ष में नहीं रह सकतीं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में स्पैजरिक बनाने की अपनी एक अलग विधि है आज इससे ही छेड़–छाड़ हो रही है नये के नाम पर जो कुछ भी किया जा रहा है वह इस तरफ़ सोचने को विवश करता है कि नये पन का यह प्रयास कहीं इलेक्ट्रो होम्योपैथी को रसातल में न ले जाये,

यदि समय रहते हम न चेते तो गम्भीर परिणामों को वह भुगतेंगे जिनका कोई दोष नहीं होगा।

प्रवेश प्रारम्भ

Offered Courses

Name of the Course	Abbreviation	Eligibility	Duration
Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy	F.M.E.H.	10+2 (Any Stream) or Equivalent	Two Years (4 Semester)
Certificate in Electro Homoeopathy	C.E.H.	10th. Standard or Equivalent	2 Years
Advance Certificate in Electro Homoeopathy	A.C.E.H.	RegisteredPractitioner in any Branch or Equivalent	1 Year
Graduate in Electro Homoeopathic System	G.E.H.S.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	4 Years Plus (1 Year Internship)
Post Graduate in Electro Homoeopathy	P.G.E.H.	Graduate in any Medical Stream or Equivalent	2 Years

Institute of Electro Homoeopathy

कानपुर

स्थान

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र

127/204(डी) –एस, जुही, कानपुर–208014

बी0ई0एच0एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।

सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक प्रेमियों से निवेदन है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक डा0 काउण्ट मैटी का जन्म दिन धूम–धाम से मनायें

11 जनवरी

1809

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश

8–लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ–226001

प्रश0 कार्या0 : 127/204 "एस" जूही,कानपुर–208014